

---

# Sakalajanani Stavah

---

## सकलजननीस्तवः

---

### Document Information

Text title : sakalajananiIstavaH

File name : sakalajananiIstavaH.itx

Category : devii, aShTaka, devI, pArvati

Location : doc\_devii

Author : Durgaprasad DvivedI

Transliterated by : Rangarathnam Gopu

Proofread by : Rangarathnam Gopu, Rajani Arjun Shankar

Latest update : November 15, 2020

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

सकलजननीस्तवः



जनन-मरण-जन्म-त्रास-घोरान्धकार-प्रशमन-करणायाहाय काचित्प्रदीप्तिः ।  
तरुण-तरणि-रागं म्लानिमानं नयन्ती विहरतु मम चित्ते चन्द्र-खण्डावतंसा ॥ १ ॥

न भवति खलु यावत्काय-वैक्लव्य-भावो न च पतति कृतान्त-क्रूर-दृष्टि-प्रपातः ।  
ननु हृदय ! समुद्यद्दीन-दैन्यावसाद-प्रणयन-रसिकां तां तावदासादयाशु ॥ २ ॥

सरस-सरसिजात-स्फार-सौन्दर्य-सार-स्फुरदवयव-काण्डोद्दाम-लावण्यवापी ।  
अनुसरदनुकम्पा-पूर-पूर्णातिमात्रं शमयतु, मम तापं सा शशाङ्कार्ध-चूडा ॥ ३ ॥

जननि ! नत-निलिम्पी-मौलि-मन्दार-माला-श्लथ-कुसुम-मरन्द-म्लान-पादारविन्दे ।  
भव-परिभव-विद्धे वासना-जाल-रुद्धे मसृण-नयन-पातं पातयास्मिन् वराके ॥ ४ ॥

सकल-भुवन-भारं पञ्च-कृत्यावसानं नतिसुकृतिषु देवेषूच्चकैरर्पयित्वा ।  
किमपि निगम-रूढं गूढ-तत्त्वं प्रपन्ना शिशिरयतु, मदीयं स्वान्तमश्रान्तमेषा ॥ ५ ॥

जननि ! यदि भवत्याः शक्तिरात्म-प्रभावं व्यपनयति, तदानीं निष्क्रियो लोक एषः ।  
इति परिचित-तत्त्वेऽप्यज्ञभावं भजन्तस्तवसमयविमूढाः संसरन्ति, स्वलन्ति ॥  
६ ॥

प्रकृति-गुण-विकाराः प्राकृते व्याप्रियन्ते न खलु पुरुषभावे दर्शनेऽस्मिन् स्फुटेऽपि ।  
तव समय-सपर्या-भावान्धः शरीरी सकलजननि ! नाहम्भावभावं जहाति ॥ ७ ॥

श्रुतिरपि परिमातुं यां न शक्नोत्यशेषात्तदितर-जन-गाथा-जल्पनास्तां, सुदूरे ।  
इति विहित-विवेकः पाहि पाहीति जल्पन् कथमपि तव पाद-ध्यान-दत्तादरः स्याम्  
॥ ८ ॥

इति सकलजननीस्तवः सम्पूर्णः ।

Encoded by Rangarathnam Gopu

Proofread by Rangarathnam Gopu, Rajani Arjun Shankar

*Sakalajanani Stavah*

pdf was typeset on December 22, 2020

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

